विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2569, 14 जून, 2025, वर्ष 1, अंक 4 (संशोधित) (जुलाई 1971 से लगातार प्रकाशित)

रजि. नं. MHHIN/25/RAA23 प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00

अनेक भाषाओं में पत्रिका देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

धम्मवाणी

न अत्तहेतु न परस्स हेतु, न पुत्तमिच्छे न धनं न रट्ठं।
न इच्छेय्य अधम्मेन समिद्धिमत्तनो, स सीलवा पञ्ञवा धम्मिको सिया॥

– धम्मपदपाळि, 84, पण्डितवग्गो

जो अपने लिए या दूसरे के लिए पुत्र, धन अथवा राज्य की कामना नहीं करता और न अधर्म से अपनी उन्नति चाहता है, वह शीलवान, प्रज्ञावान और धार्मिक होता है।

सम्राट अशोक द्वारा सेना का नि:शस्त्रीकरण?

(आज के कठिन दौर में जहां युद्ध हमारी परछाई बन चुका है, इस विषय पर पुराने साहित्य पर आधारित पूज्य गुरुजी श्री स. ना. गोयन्काजी के विचार प्रस्तुत हैं। सं.)

कलिंग-युद्ध के उपरांत अशोक भगवान की शिक्षा का वास्तविक अनुयायी बना। लेकिन वह सेना और शस्त्रों को कैसे त्याग सकता था? सैनिकों को भिक्षु कैसे बना सकता था (जैसा कि कई लोग कहते हैं)? उलटे भगवान की शिक्षा के अनुसार उसने अधिक प्रबल सेना रखी, परंतु उसका उपयोग अपने देश की भीतरी और बाहरी सुरक्षा के लिए किया, न कि पड़ोसी देशों पर आक्रमण करने के लिए। उसका साम्राज्य अफगानिस्तान से बंगाल तक फैल गया था। इतना बड़ा साम्राज्य इसके पहले अथवा इसके बाद आज तक किसी भी भारतीय सम्राट का नहीं हुआ। इस विशाल उपमहाद्वीप को सुरक्षित रखने के लिए उसने पर्याप्त संख्या में शक्तिशाली सशस्त्र सेना देश की सीमाओं पर तैनात कर रखी थी। कलिंग-युद्ध के पश्चात उसने स्वयं किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, लेकिन अपने देश की अखंडता और स्वतंत्रता पूर्णरूप से कायम रखी। कलिंग-युद्ध के बाद मृत्यु-पर्यंत वह 29 वर्षों तक राज्य करता रहा। इतने लंबे समय तक कोई विदेशी दुश्मन देश की एक इंच भूमि न ले सका। किसी ने आक्रमण करने का दुस्साहस तक नहीं किया। अशोक ने देश की स्वतंत्रता पर जरा-भी आंच नहीं आने दी। सेना को भिक्षु बना देने से क्या यह संभव होता? क्या सेना का नि:शस्त्रीकरण करने से यह संभव होता? हम इतना तो सोचें कि जिस कलिंग पर इतना अत्याचार हुआ, उसके तुरंत बाद सेना को भिक्षु बना दिये जाने पर क्या कलिंग देशवासियों के मन में प्रतिशोध की आग न भड़क उठती? क्या वे बगावत नहीं कर देते? इतने बड़े साम्राज्य में अन्यत्र भी अराजकता नहीं फैल जाती?

भगवान बुद्ध स्वतंत्रता-प्रेमी थे। उनका परम श्रद्धालु अनुयायी अशोक देश की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण कैसे न रखता? अपनी प्रजा को सुरक्षित कैसे न रखता? भगवान बुद्ध राज्य की रक्षा के प्रबल समर्थक थे। पराधीनता को बुरा मानते थे। भगवान बुद्ध देश की रक्षा को बहुत महत्त्व देते थे। उन्होंने अपने उपदेशों में बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा है कि पराधीन कभी सुखी नहीं हो सकता। स्वाधीन ही सुखी रहता है।

नाञ्ञस्स पुरिसो सिया– किसी दूसरे का गुलाम हो कर नहीं रहना चाहिए।

नाञ्ञं निस्साय जीवेय्या– किसी दूसरे पर आश्रित हो कर नहीं जीना चाहिए।

– उदान 52, सत्तजटिलसुत्तं

इसीलिए भगवान बुद्ध ने अपने जीवन काल में किसी राजा को अपनी सेना कम करने या युद्ध रोकने के लिए कभी नहीं कहा, बल्कि जरूरत पड़ने पर उसका समर्थन ही किया। यथाः–

बुद्धानुयायी शासकों के युद्ध अभियान

मगध राजकुमार अभय

बिंबिसार का राज्य पश्चिम में काशी और पूर्व में अंग तक फैला हुआ था। पश्चिम में कोसलनरेश प्रसेनजित से उसके मधुर पारिवारिक संबंध थे। उसकी बहन का विवाह प्रसेनजित से हुआ था और प्रसेनजित की बहन का विवाह बिंबिसार से। इन संबंधों के कारण उसके राज्य की पश्चिमी सीमा सुरक्षित थी, परंतु पूर्वी सीमा पर पड़ोसी राज्यों के छिट-पुट हमले और मुठभेड़ होती रहती थी। बिंबिसार को इस पूर्वी राज्य-सीमा की सुरक्षा के लिए वहां हमेशा सेना रखनी पड़ती थी। इतना ही नहीं, समय-समय पर आवश्यकता पड़ने पर राजधानी राजगृह से अतिरिक्त सेना भी भेजी जाती थी। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि एक बार दुश्मनों से लड़ने के लिए जो सेना राजधानी से भेजी गयी उसका नेतृत्व बिंबिसार के पुत्र अभय राजकुमार ने किया। इस युद्ध में जीत कर आने पर बिंबिसार ने अपने पुत्र की विजय पर खुशियां मनायीं और सात दिनों के लिए उसे राजगद्दी पर बैठाया। यह भगवान बुद्ध की उपस्थिति में और उनकी जानकारी में होता रहा। उन्होंने इसका जरा-भी विरोध नहीं किया। स्पष्ट

है कि वे राज्य की सुरक्षा के प्रबल समर्थक थे–चाहे वह गणतंत्रीय लिच्छवी राज्य हो, या एकतंत्रीय मगध राज्य, या कोशल राज्य।

– धम्मपद-अट्ठकथा 2.170-171, अभयराजकुमारवत्थु

कोशलनरेश प्रसेनजित

कोशलनरेश द्वारा भी अपने राज्य की सुरक्षा के प्रति सजग रहने के तथ्य हमारे सामने हैं। उसके राज्य की भी पूर्वी सीमा लगभग सुरक्षित थी, परंतु पश्चिमी राज्य-सीमा पर पड़ोसी दुश्मनों के हमले होते ही रहते थे। इसकी सुरक्षा के लिए उसका प्रबल सैन्यदल सदा मुस्तैद रहता था। राज्य की सुरक्षा के लिए राजधानी श्रावस्ती से सेना का नेतृत्व करता हुआ प्रसेनजित स्वयं कभी-कभी सीमा पर युद्ध लड़ने जाता था। राज्य की रक्षा के लिए लड़े गये ऐसे युद्ध भगवान बुद्ध से अज्ञात नहीं थे। कुछ प्रसंग ऐसे भी हैं कि युद्ध के लिए जाते हुए प्रसेनजित अपनी सेना-सहित जेतवन विहार के सामने से गुजरता तो जेतवन के द्वार पर सेना को रोक कर स्वयं भगवान से मिलने के लिए जाता और नमस्कार करके उन्हें युद्ध-यात्रा की सूचना देता। एक बार ऐसे प्रसंग में भगवान मुस्कराते हुए पूछते हैं कि आज किससे युद्ध करने जा रहे हो? बिंबिसार से? या लिच्छवियों से? या किसी अन्य शत्रु से?

– मज्झिमनिकाय 2.350, अङ्गुलिमालसुत्तं

प्रसेनजित जब युद्ध जीत कर वापस लौटता तब भी जेतवन विहार के सामने से गुजरते हुए सेना को बाहर रोक कर भगवान को नमस्कार करने और शत्रु को पराजित करने की सूचना देने तथा अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए उनसे फिर मिला करता था। वह भगवान का अनन्य भक्त था। युद्ध के लिए जाते समय अक्सर भगवान से मिलता और उन्हें नमस्कार करता, तभी तो भगवान उससे ऐसा प्रश्न करते हैं कि इस बार किससे युद्ध करने जा रहे हो? यदि उसे जरा-भी भान होता कि भगवान सशस्त्र सेना रखने और देश की सुरक्षा के लिए भी उसे युद्ध में जोतने के विरोधी हैं तो प्रसेनजित अपनी सेना बर्खास्त कर देता। ऐसा न भी करता और सीमा पर युद्ध करने के लिए सेना भेजता, या स्वयं सेना का नेतृत्व करते हुए सीमा की ओर जाता भी, तो जाते हुए, अथवा जीत कर लौटते हुए, किस मुँह से भगवान से मिलता? स्पष्ट है कि भगवान राज्य की सुरक्षा के लिए सैन्यबल के प्रयोग के समर्थक थे, तभी तो युद्ध में जाते समय और जीत कर लौटते समय राजा प्रसेनजित भगवान को नमस्कार किया करता था।

– अङ्गुत्तरनिकाय 3.10.30, दुतियकोसलसुत्तं

सम्राट अशोक की आतंकवाद एवं सरहदी आक्रमणों से निपटने की तजबीज

भगवान बुद्ध ने बाहरी आक्रमण का सामना करने के लिए लिच्छवी गणतंत्र को जो सप्तांगिक उपदेश दिया था वह अशोक को विदित था। गणतंत्र को दिये गये उपदेशों में से पहले दो उपदेश ये थे कि सरहद पर युद्ध के बादल मँडराते ही सभी सांसद गणराज्य के संस्थागार (संसद-भवन) में तुरंत एकत्र हों और एक-मत तथा एक-जुट होकर देश की रक्षा के लिए तैयार हो जायें। गणतंत्र है तो अनेक घरेलू मुद्दों पर मतभेद हो सकता है, विवाद हो सकता है– परंतु जब देश की स्वतंत्रता खतरे में हो तब सारे मतभेद भुला कर एकमात्र मुद्दा देश को बचाने का हो और उसमें सब एक-मत, एक-जुट होकर दुश्मन का सामना करने में लग जायँ।

अशोक सर्वसमर्थ सम्राट था। अत: शेष पांच उपदेशों का पूर्णतया पालन करता था, परंतु पहले दो उस पर लागू नहीं होते थे। बाहरी हमला होने पर देश की रक्षा के लिए वह स्वयं निर्णय करता था। जब चाहे, जिसे बुला कर उससे मंत्रणा कर सकता था, फिरभी सलाह-मशविरा करने के लिए मंत्रि-परिषद का भी गठन कर रखा था।

भगवान बुद्ध ने एकतंत्रीय राजा के लिए बाहरी आक्रमण से प्रजा को सुरक्षित रखने का जो महत्त्वपूर्ण विवरण दिया, अशोक ने उसका अक्षरश: पालन किया।

भगवान बुद्ध द्वारा एक चक्रवर्ती सम्राट का जो विवरण दिया गया है अशोक उससे अवगत था। भले वह अपने आप को चक्रवर्ती सम्राट नहीं कहता, यहां तक कि अपने आप को सम्राट या महाराजा भी नहीं कहता, बल्कि केवल "राजा" शब्द का प्रयोग करता। यह उसकी असीम विनम्रता का परिचायक था। वैसे उसका राज्य एक चक्रवर्ती सम्राट के राज्य की भांति सागर के एक तट से दूसरे तट तक की सारी भूमि पर फैला हुआ था। पूर्व में बंग सागर का तट और पश्चिम में सिंधु सागर (अरब सागर) का तट। वह एक चक्रवर्ती राजा की भांति अदण्डेन असत्थेन बिना किसी डंडे (अस्त्र) के या शस्त्र के अविजित देशों को धर्म से जीतता है। इसीलिए पड़ोसी देश उसे *"दीपक्कवत्ती"* (द्वीप चक्रवर्ती), यानी, जंबुद्वीप का चक्रवर्ती राजा कहने लगे थे।

भगवान ने बताया था कि एक चक्रवर्ती राजा के पास बलवान चतुरंगिणी सेना होती है और उसके बलवान राजपुत्र होते हैं। जब वह शस्त्र द्वारा युद्ध करके किसी को जीतेगा ही नहीं तो यह सब ताम-झाम किसलिए? स्पष्ट है कि यह प्रजा की रक्षा के लिए आवश्यक है। वह अपने देश की और प्रजा की रक्षा करता है।

– अङ्गुत्तरनिकाय, 5.133, धम्मराजासुत्तं

भगवान इस सुत्त में स्पष्ट संकेत करते हैं कि चक्रवर्ती राजा अपने राज्य के गांव-नगर-जनपदों की रक्षा करता है और वहां के सभी जाति के निवासियों की भी रक्षा करता है।

इसी प्रसंग में एक बात और उल्लेखनीय है कि चक्रवर्ती राजा अपनी सेना की भी रक्षा करता है। जब सेना ही नहीं रखेगा तो उसकी रक्षा क्या करेगा भला? उद्देश्य स्पष्ट है कि वह सेना की संख्या घटा दे या उसे अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र न दे, तो कोई भी दुष्ट पड़ोसी अपनी बलवान सेना से इस कमजोर सेना को नष्ट कर देगा। अत: अपनी सेना को सुरक्षित रखने के लिए एक चक्रवर्ती राजा उसे औरों से अधिक संख्या में रखता है और उसे आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित रख कर सही माने में उसकी उचित सुरक्षा करता है, जिससे कि किसी बलवान सेना के बाहरी आक्रमण से देश की सुरक्षा कर सके। पड़ोसी देशों ने भी अशोक द्वारा भेजी गयी बुद्ध की शिक्षा का अक्षरश: पालन किया। उन्होंने न अपनी सेना बरख्वास्त की और न ही उनके शस्त्र छुड़वाये। तब भला अशोक ने स्वयं बुद्ध की शिक्षा का पालन न किया हो, यह कथन कितना हास्यास्पद है।

सच्चाई यह है कि अशोक द्वारा सीमांत प्रदेश में बनाये गये सुदृढ़ किले और उनमें तैनात विशाल चतुरंगिणी सेनाएं देख कर पड़ोसी राज्य भयभीत होते थे। वे जानते थे कि अशोक की सैन्यशक्ति इतनी प्रबल है कि अब भी अपनी फौजी ताकत के बल पर वह जब चाहे तब हमें निगल सकता है।

सम्राट अशोक का शिवसंकल्प

पड़ोसी देशों पर हमला न करने के उसके शिवसंकल्प से ही पड़ोसियों के

साथ अच्छे संबंध बनाने का श्रीगणेश हुआ और फिर उसने पड़ोसी देशों की अनेक प्रकार से सहायता करनी शुरू की। जैसे अपने राज्य में, वैसे ही पड़ोसी देशों में भी यात्रियों की सुविधा के लिए सड़कों पर छायादार व फलदार वृक्ष लगवाये, मनुष्यों और पशुओं के लिए आवश्यक औषधियों के पेड़-पौधे लगवाये तथा स्थान-स्थान पर यात्रियों की सुविधा के लिए कुएं खुदवाये, प्याऊ बैठाये। उसने जैसे अपने राज्य में, वैसे ही अन्य राज्यों में मनुष्यों के ही नहीं, पशुओं तक के औषधालय खोले। अत्यंत समृद्ध और उदार भारत की अपने पड़ोसी देशों के लिए यह महत्त्वपूर्ण भेंट थी। सक्रिय सद्भावना थी।

इतना ही नहीं, अब भी वह पड़ोसियों को जीतता है पर युद्ध से नहीं, धर्म से जीतता है। यानी, उसने अपने साम्राज्य में जिस धर्मराज्य की स्थापना की, पड़ोसियों को भी उसके लिए सुझाव देता है। उसी प्रकार की शासनतंत्र प्रणाली और आदर्श न्यायपालिकाओं की स्थापना की सलाह देता है जिसका कि वह स्वयं पालन करता है। अनेकों ने उसकी शासन-नीति का सहर्ष अनुकरण किया।

उसने अनेक पड़ोसी देशों में धर्मदूत भेजे जो कि धर्म की शिक्षा ले कर गये, भगवान बुद्ध की संपूर्ण वाणी ले कर गये और उसके साथ-साथ कल्याणी विपश्यना विद्या ले कर गये, जिसे उन देशों ने सहर्ष स्वीकार किया। इसमें भारत का कोई स्वार्थ नहीं था। श्रीराम द्वारा लंका को जीतने का उदाहरण हमारे सामने है। लंका को जीत कर, उस पर राज्य करने के लिए अयोध्या से वहां कोई वाइसराय नहीं भेजा गया। वहां के लोगों का राजनैतिक या आर्थिक शोषण नहीं किया गया। वहीं के एक योग्य व्यक्ति को वहां का राज्य सौंप दिया गया ताकि वहां के लोग किसी पराये शोषण से उत्पीड़ित न हों।

भारत का यह एक पुरातन उच्च आदर्श रहा जिसे भगवान बुद्ध ने चक्रवर्ती सम्राट के उदाहरण के रूप में लोगों के सामने रखा था। अशोक ने उसका अक्षरशः अनुकरण किया। उसने पड़ोसी देशों पर धर्ममयी विजय प्राप्त की। इससे वहां अशोक का, या भारत का साम्राज्य स्थापित नहीं हुआ, फिर भी उसने लोगों के हृदय को जीत लिया। वहां के लोगों का हृदय-सम्राट बन गया। यह केवल उसके अपने जीवनकाल तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि सहस्राब्दियों बाद आज भी इन पड़ोसी देशों के लोग अशोक को एक आदर्श राजा मानते हैं और उसने जो धर्म की शिक्षा उन्हें भेजी, उसके लिए उसका असीम उपकार मानते हैं। मैंने देखा कि बरमा के गृहस्थ सुबह-सुबह मंगल कामना का पाठ करते हैं तो कहते हैं–

देवो वस्सतु कालेन, सस्ससम्पत्ति हेतु च।
फीतो भवतु लोको च, राजा भवतु धम्मिको॥

यानी, अच्छी फसल के लिए समय पर वर्षा हो, देश में समृद्धि हो और देश का राजा धार्मिक हो।

जब वे कहते हैं कि देश का राजा धार्मिक हो तब अशोक के धर्मराज्य का आदर्श उनके मन में रहता है। वे चाहते हैं कि हमारे देश का राजा भी अशोक जैसा ही धार्मिक हो।

वे कामना करते हैं कि उनका राजा भी उस धर्मराजा के आदर्श का पालन करे। तभी नित्य पाठ करते हैं–

यथा रक्खिंसु पोराणो, सुराजानो तथेविमं।
राजा रक्खतु धम्मेन, अत्तनोव पजंपजं॥

– अट्ठकथा, सङ्गायनस्स पुच्छा-विस्सज्जना 1.311 (म्यंमा)

यानी, जिस प्रकार पुराने राजाओं ने अपनी प्रजा की रक्षा की। (यहां जो पुराने राजाओं की ओर ध्यान गया है वह सम्राट अशोक तथा उस जैसे और भी जो धर्मराजा हुए उनकी ओर है।)

हमारा राजा भी अपनी प्रजा की रक्षा वैसे ही करे जैसे कि वह अपनी संतान की करता है।

यह थी अशोक की धर्मविजय जो वस्तुत: भारत भूमि की विजय साबित हुई। भारत ने इस विजय से पड़ोसी देशों का शोषण (exploitation) नहीं किया, उन्हें गुलाम नहीं बनाया। फिर भी उनके हृदय पर एक ऐसी सुहावनी छाप छोड़ी जिससे कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदियों तक उनके हृदय में भारत की महानता स्थापित हुई। उन देशों से हर वर्ष लाखों की संख्या में लोग भारत और नेपाल की धरती को नमस्कार करने के लिए आते रहे हैं, आज भी आते हैं, भविष्य में भी आते रहेंगे।

यह धर्म द्वारा प्राप्त विजय थी, न कि शस्त्रों द्वारा। धर्म की विजय चिरायु होती है, जब कि शस्त्रों की विजय अल्पायु। धर्मविजय से विजेता और विजित दोनों प्रसन्न होते हैं, दोनों संतुष्ट होते हैं। तभी अशोक ने अपने एक शिलालेख में ये भाव प्रकट किये:–

¤ ***धर्म द्वारा विजय प्राप्त करने से मुझे तृप्ति हुई है।***

¤ ***जो धर्मरति है वह पूर्णतया अतिरति है।***

यानी, इस लोककल्याणकारी विजय में जो आनंद है वह संपूर्ण आनंद है, अति आनंद है।

– शाहबाजगढ़ी का तेरहवां शिलालेख

यह थी भगवान बुद्ध के परम अनुयायी महान अशोक की धर्मविजय! यह थी महान भारत की धर्मविजय!

ऐसी विजय जिसमें विजेता भी जीता और विजित भी। हारा कोई नहीं। सब की विजय हुई।

सदियों की गुलामी के बाद देश जब आजाद हुआ तब स्वतंत्र भारत ने धर्मराज अशोक की इसी गौरवमयी धर्मविजय की याद को ताजा करते हुए राष्ट्र के ध्वज पर 'अशोकचक्र' अंकित कर उसे आकाश में लहराया। धर्मराज के चतुर्मुखी सिंहों को राजचिह्न के रूप में स्वीकार कर उसका समुचित सम्मान किया और पड़ोसी देशों को आह्लादित किया। भारत का पुरातन गौरव उसे पुन: प्राप्त हो! भारत पुन: सारे विश्व के लोगों का हृदय-सम्राट बने!!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

(विश्व विपश्यनाचार्य पूज्य श्री गोयन्का की पुस्तक 'राजधर्म' से साभार)

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री दत्तात्रय राऊत, धम्म वसुधा विपश्यना केंद्र वर्धा के केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व
आचार्य

1. श्रीमती कमलताई आर. गवई, अमरावती

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री प्रकाश चांदेकर, नागपुर
2. श्री राहुल तेलंग, नागपुर
3-4. श्री राजाभाऊ एवं श्रीमती प्रमिला राऊत, वाशिम
5. श्रीमती ऊषा तायडे, अकोला
6. श्रीमती माला मंडल कोलकाता

नव नियुक्तियां
सहायक आचार्य

1-2. श्री अजय चोपड़ा एवं श्रीमती छवि त्रिवेदी, इगतपुरी
3. श्री चन्द्रकांत वाघमारे, पुणे
4. Mrs. Xinhua HE, China
5. Mrs. Zhi Juan Chen, China
6. Ms. Severine Mons, Australia

निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र "धम्म सुधाकर"

उत्तर प्रदेश के जिला हाथरस, तहसील सिकंदराराऊ (सिकंदराराव) के ग्राम मथुरापुर में बुद्ध पूर्णिमा, दिन सोमवार दिनांक 12 मई 2025 से नये विपश्यना ध्यान केन्द्र "धम्म सुधाकर" के निर्माणकार्य का शुभारंभ हुआ है।

यहां लगभग 100 साधक-साधिकाओं, के लिए ध्यान केंद्र का निर्माण चार चरणों में होगा। प्रथम चरण में लगभग 30 से 40 साधक-साधिकाओं के लिए निवास, शिविर कार्यालय, भोजनालय, छोटा धम्मकक्ष, आवश्यक मार्ग एवं जनसुविधाओं की योजना है।

केंद्र का पता: धम्म सुधाकर विपश्यना केंद्र, ग्राम- मथुरापुर, पोस्ट- हसायन, तहसील- सिकंदराराव, जिला- हाथरस, उत्तर प्रदेश –204 212 । ईमेल: dhammasudhakara@gmail.com; **संपर्क नंबर:** मेरठ विपश्यना संस्थान, मेरठ +917505414181, +919555515548, +919837035642

बैंक विवरण: मेरठ विपश्यना संस्थान, इंडियन बैंक, मेरठ शाखा, Account No. 6575615053, IFSC Code: IDIB000M685, PAN: AAATM9958M

आप भी दान पारमी के इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठा सकते हैं। मेरठ विपश्यना संस्थान, मेरठ को 80G आयकर की सुविधा प्राप्त है। कृपया दान की रसीद प्राप्त करने के लिए दान-विवरण उपरोक्त नंबर अथवा ईमेल पर अवश्य भेजें।

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविर:

1. रविवार, 13 जुलाई, 2025 आषाढ़-पूर्णिमा (धम्मचक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में।

2. रविवार, 05 अक्टूबर, 2025 पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि (29 सितंबर, 2013) के उपलक्ष्य में।

3. रविवार, 18 जनवरी, 2026 माताजी की पुण्य-तिथि (5 जनवरी, 2016) एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि (19-1-1971) के उपलक्ष्य में।

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिनः

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*। **सब के लिए संपर्क: 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; **Email:** oneday@globalpagoda.org

3.'धम्मालय' विश्राम गृह

एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम के लिए सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or Email- *info.dhammalaya@globalpagoda.org or info@globalpagoda.org*

दोहे धर्म के

युद्ध भूमि योद्धा तपे, तपे सूर्य आकाश।
तापस अंतस में तपे, करे दुखों का नाश॥

रण सहस्र योद्धा लड़े, जीते युद्ध हजार।
पर जो जीते स्वयं को, वही शूर सरदार॥

चित समरांगण जो करे, सतत घोर संग्राम।
ऐसे जाग्रत संत को, है आराम हराम॥

समय बड़ा अनमोल है, समय बड़ा बलवान।
बिन प्रमाद तपता रहे, पाए पद निर्वाण॥

दूहा धरम रा

दुरजनता स्यूं द्वेस कर, कर दुरजन स्यूं प्यार।
अपणै चित रै प्यार स्यूं, दुरजन चित्त सुधार॥

द्वेस द्रोह स्यूं, बैर स्यूं, आकुल ब्याकुल होय।
प्यार प्रेम स्यूं, स्नेह स्यूं, हरखित पुलकित होय॥

जगै द्वेस स्यूं द्वेस ही, जगै प्रीत स्यूं प्रीत।
सक जागै संदेह स्यूं, या हि जगत री रीत॥

औरां रै सुख-दुक्ख नै, अपणां सा ही जाण।
औरां स्यूं समरस हुवै, साचो संत सुजाण॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2569, 14 जून, 2025

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50) "विपश्यना" (संशोधित) रजि. नं. MHHIN/25/RAA23, **प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00**

Posting day- **14th of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)
DATE OF PRINTING: 10 June, 2025, DATE OF PUBLICATION: 14 June, 2025

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org